P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मोहन राकेश के नाटकों में परिवार

किरन लता दुबे
शोध छात्रा,
हिन्दी विभाग,
वर्धमान विश्वविद्यालय
पश्चिम बंगाल

सारांश

साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है नाटक नाटक दृश्य काव्य है नाटक को चाक्षुष यज्ञ भी कहा गया है यह मनुष्य और मनुष्य समाज के साथ आन्तरिक रूप से जुड़ा हुआ है नाटक के क्षेत्र में मोहन राकेश का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है अपने नाटकों के माध्यम से उन्हें सर्वाधिक सफलता प्राप्त हुई उनके नाटकों में आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे–अधूरे और पैर तले की ज़मीन महत्वपूर्ण नाटक हैं उनके प्रथम नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' के संदर्भ में डॉ गोविन्द चातक के विचार बहुत महत्त्वपूर्ण हैं उनके अनुसार आषाढ़ का एक दिन एक सफल कृति है सच्चाई यह है कि यह बद्ध दृष्टि में बँधनेवाला नाटक नहीं है हर अन्वेषी दृष्टि के आगे यह अर्थ के नये स्तर खोलता है और बहुधा 'एक से अधिक संकेत' देता है।[1]

मुख्य शब्द : सामाजिक संरचना, नाटक, परिवार।

प्रस्तावना

नाटक के साथ सामाजिक संरचना का गहरा संबंध है यहाँ हम नाटक और सामाजिक संरचना के संबंध का अध्ययन करते समय सामाजिक संरचना का अभिप्राय समझ लें सामाजिक संरचना क्या है? इसके अंग क्या हैं और नाटक के साथ इसका संबंध किस प्रकार महत्त्वपूर्ण है? समाज की बनावट समझना जरूरी है और ऐसी बनावट के भीतर मानवीय संबंध समझना भी जरूरी है मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह समाज में रहते हुए अपने संबंधों का निर्वाह करता है, ये संबंध उसकी संवेदना से जुड़े होते हैं, संवेदनशील होते हैं समाज का अपना एक ढाँचा होता है मानव शरीर या भौतिक वस्तु की संरचना या एक आकृति होती है, उसी प्रकार समाज की भी एक संरचना या आकृति होती है, हम इसे सामाजिक संरचना कहते हैं बहुत सी छोटी–छोटी इकाईयों, तत्वों या अंगों से मिलकर इसका निर्माण होता है स्वास्थ्य परिवार, विवाह, शिक्षा, प्रशासन आदि के लिए निर्मित विभिन्न संस्थाएँ परिवार विवाह, प्रतिमानित संबंधों, मूल्यों एवं पदों आदि से मिलकर समाज की संरचना होती है।

संरचना से अभिप्राय एक आकृति या ढाँचे से है इसका बाहरी स्वरूप हमें दिखता है निर्माण में सहायक ये इकाइयाँ अपने–अपने स्थान पर रहकर इच्छित संरचना के अनुकूल एक विशेष प्रकार का क्रमबद्ध स्वरूप निर्मित करती हैं ये क्रमबद्ध स्वरूप अधिक स्थायी होता है एवं सभी इकाईयाँ परस्पर व्यवस्थित रूप से सम्बन्धित होती हैं इन सभी इकाईयों के संयोग एवं सहयोग से समाज का बाह्य स्वरूप निर्मित होता है जिसे हम सामाजिक संरचना कहते हैं समाज को समझने के लिए इन बिन्दुओं को समझना आवश्यक है सामाजिक संरचना की प्रकृति स्थिर होती है इसका स्वरूप व्यापक और जटिल होता है सामाजिक संरचना स्थूल नहीं है, अति सूक्ष्म है मनुष्य शरीर की संरचना में हाथ, पांव, नाक, कान, आँख एवं मुँह आदि अंग अपने–अपने स्थान पर स्थिर और परस्पर एक–दूसरे से व्यवस्थित रूप से जुड़े होते हैं इन इकाईयों में स्थायित्व न हो तो संरचना बनती–बिगड़ती रहेगी अर्थात् संरचना के माध्यम से हम किसी भी वस्तु की बाहरी आकृति या स्वरूप से परिचित होते हैं, उनकी आन्तरिक संरचना से नहीं सामाजिक संरचना के संदर्भ में विद्वानों के महत्त्वपूर्ण विचार हैं – हर्बर्ट स्पेन्सर के अनुसार सामाजिक संरचना संस्थाओं का कुल योग है।[2]

उद्देश्य

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहता है अपने जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये उसने समाज की रचना की। समाज की एक संरचना या आक1ति होती है। संरचना या आकृति बहुत सी छोटी–छोटी इकाईयों, तत्वों या अंगों से मिलकर निर्मित होती है। परिवार, विवाह, शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशासन, प्रतिमानित तत्व हैं। समाज के निर्माण में इन अंगों की महत्वपूर्ण भूमिकाएं हैं। अपने–अपने स्थान पर रहकर ये सभी इकाईयाँ इच्छित संरचना के अनुकूल परस्पर व्यवस्थित रूप से संबंधित होती हैं। मनुष्य इसी

सामाजिक संरचना के बीच अपना जीवन जीता है और जीवन के लिये विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ करता है।

सामाजिक संरचना के सम्बन्ध में मैकाइवर तथा पेज के विचार बहुत ही महत्वपूर्ण विचार हैं उनके अनुसार समूह निर्माण के विभिन्न तरीके संयुक्त रूप में सामाजिक संरचना के जटिल प्रतिमान का निर्माण करते हैं... सामाजिक संरचना के विश्लेषण में सामाजिक प्राणियों की विविध प्रकार की मनोवृत्तियों तथा रूचियों के कार्य प्रकट होते हैं।[3]

मोहन राकेश के अनुसार नाट्याकृतियों में सामाजिक संरचना और उसकी मूल इकाई परिवार का अध्ययन करते हुए महत्त्वपूर्ण तथ्य और सत्य प्राप्त होते हैं सामाजिक संरचना की महत्वपूर्ण इकाई के रूप में परिवार का स्थान अन्यतम है यह सामाजिक संरचना की मूल इकाई है सामाजिक संरचना में परिवार की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है परिवार के संदर्भ में विचारों में मतभेद देखने को मिलते हैं परिवार का अभिप्राय किन्हीं की दृष्टि में रक्त संबंध से है और किन्हीं की दृष्टि में यौन संबंध से कुछ विद्वान ऐसे भी हैं जो परिवार को अन्य धरातल पर भी देखते हैं समाज के सारे संबंध व्यक्ति और परिवार से होकर गुजरते हैं इनके दैनंदिन जीवन की अनंत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संबंधों के सुविस्तृत जाल फैले हुए हैं 'आषाढ़ का एक दिन' में पारिवारिक महत्त्वपूर्ण चिह्न प्राप्त होते हैं राकेश ने इन चिह्नों में परिवार के बौद्धिक, सुसंस्कृत तथा आर्थिक धरातलों को अपनी अभिव्यक्ति में रंग–सम्प्रेषण का कार्य किया है 'आषाढ़ का एक दिन' में अम्बिका, अम्बिका के पति और मल्लिका को लेकर ऐसे ही परिवार की संकल्पना प्रस्तुत की गई है यह परिवार भारतीय ग्राम परिवार है जो अपने दैनिक जीवन के विविध कर्मों में अपने ज्ञान, अभिरूचि तथा जीवन के व्यापक अभिप्राय का चित्र प्रस्तुत करते हैं उनके दैनिक जीवन के अनुभव पारिवारिक परम्परा को रेखांकित करते हैं नाट्याकार ने उनके वास स्थान का सुविस्तृत चित्र प्रस्तुत किया है इस सुविस्तृत चित्र से परिवार का जीवन दर्शन प्रस्तुत हो जाता है जीवन के संदर्भ में उनके अभिप्राय और जीने की कला की विविध संवेदनाओं का पता चलता है–एक साधारण प्रकोष्ठ दीवारें लकड़ी की हैं, परन्तु निचले भाग में चिकनी मिट्टी से पोती गयी हैं बीच–बीच में गेरू से स्वस्तिक चिह्न बने हैं सामने का द्वार अँधेरी ड्योढ़ी में खुलता है उसके दोनों ओर छोटे–छोटे ताक हैं जिनमें मिट्टी के बुझे हुए दीये रखे हैं बायीं ओर का द्वार दूसरे प्रकोष्ठ में जाने के लिए है द्वार खुला होने पर उस प्रकोष्ठ में बिछे तल्प का एक कोना ही दिखायी देता है द्वारों के किवाड़ भी मिट्टी से पोते गये हैं और उन पर गेरू एवं हल्दी से कमल तथा शंख बनाये गये हैं4 जीवन यहाँ मात्र स्थूल ही नहीं हैं सूक्ष्म और संवेदनशील भी है सुनियोजित है तथा जीवन के विन्यास का आन्तरिक तथा बाह्य कौशल भी संप्रेषित है जीवन के इस चित्र से परिवार की बौद्धिक सम्पदा का पता चलता है कर्त्ता के अभाव में अम्बिका की पारिवारिक स्थिति में जटिल आर्थिक अभाव देखने को मिलते हैं इसके बावजूद अभाव के इन्हीं चिह्नों में उस परिवार की बौद्धिक सम्पदा का अन्यतम उदाहरण भी प्राप्त होता है इसी प्रकार इस पूरे परिवेश से ही उनकी आर्थिक सहजता का पता चलता है।

नाट्याकार मोहन राकेश ने इसी नाटक में कालिदास तथा मल्लिका के परस्पर सह–अस्तित्व से परिवार की संकल्पना का पूरा न हो पाना दिखलाया है कालिदास मल्लिका को अपने जीवन में ग्रहण तो करते हैं, परन्तु सामाजिक संरचना की महत्त्वपूर्ण इकाई के रूप में प्रचलित परिवार की संरचना नहीं कर पाते सामाजिक तथा कानूनी दृष्टि से परम्परित परिवार का सदस्य नहीं बना पाते यही कारण है कि इसी नाटक में परिवार का एक स्थूल स्वरूप ऐसा भी प्रकट होता है जो विलोम, मल्लिका तथा मल्लिका की बच्ची से मिलकर बनता है नाटक में यह परिवार अपने अंतरंग गुणों से श्रीहीन है यहाँ न आन्तरिक संबंध है और न परस्पर सह अस्तित्व के लिए प्रयत्न ही अनिच्छित दबाव के तहत यह परिवार निर्मित है कालिदास तथा विलोम मल्लिका को केन्द्र में रखकर सामाजिक संरचना में परिवार के दो विपरीत तथा विषम चित्र प्रस्तुत करते हैं मल्लिका की बच्ची इन दोनों विपरीत तथा विषम चित्रों के मध्य विशिष्ट प्राकृतिक जीव की तरह व्याप्त है एक ओर उसमें कालिदास व्याप्त है तथा वह स्वयं कालिदास से समृद्ध और संवेदित है दूसरी ओर विलोम उसमें परिव्याप्त होने की पूरी आकांक्षा के बावजूद उससे आत्म–विस्थापित है उसका आत्म–विस्थापन उसका चुना हुआ और स्वयं किया हुआ विस्थापन है स्थापना के लिए इच्छा, ज्ञान और क्रिया का समन्वित कोश होना चाहिए विलोम इन तीनों बिन्दुओं पर बिखरा हुआ है यही कारण है कि वह अस्वस्थ एवं विशृंखलित इच्छा को लेकर व्यस्त रहता है इसी प्रकार मानवीय मन का ज्ञान भी उसे नहीं है वह किसी के मनोनुकूल नहीं हो पाता इस प्रकार परिवार का आधार वह न रक्त संबंध के आधार पर निर्मित कर पाता है और न ही यौन संबंध के आधार पर दो परिवार के परिभाषित स्वरूप का निरर्थक उदाहरण यहीं पर उपलब्ध हो जाता है कालिदास के संदर्भ में हम यह देखते हैं कि रक्त संबंध की दृष्टि से भी वह मल्लिका के साथ पारिवारिक संरचना निर्मित नहीं करते और न ही दूसरा यौन संबंध से ही परन्तु मल्लिका की बच्ची के रूप में कालिदास के अभिज्ञान चिह्न का सुंदर उदाहरण प्राप्त होता है– विलोम–तुम नहीं चाहतीं कि कालिदास यह जाने कि अष्टावक्र क्या कहता है परन्तु मुझे उसकी बात पर विश्वास नहीं होता मैं इसलिए कह रहा था कि सम्भव है कालिदास ही देखकर बता सके कि अष्टावक्र की बात कहाँ तक सच है क्या बच्ची की आकृति सचमुच विलोम से मिलती है या....?[5]

सामाजिक संरचना की महत्वपूर्ण इकाई के रूप में परिवार 'आधे–अधूरे' नाटक के अंतर्गत विपथित परिवार के रूप में प्रकट है परिवार के सभी सदस्य एक–दूसरे से विमुख हैं उनके पारस्परिक सहयोग तथा सहअस्तित्व का उदाहरण प्राप्त नहीं होता पारिवारिक प्रयोजन के लिए जिस मन मस्तिष्क की आवश्यकता होती है, 'आधे–अधूरे' का परिवार इससे दूर है एक घर–मकान में रहते हुए भी एक ही परिवार के सदस्य होते हुए भी सदस्य परिवार की अवधारणा से मुक्त हैं प्रख्यात नाट्या निर्देशक ओम शिवपुरी ने मोहन राकेश के नाटकों की महत्त्वपूर्ण

प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत की हैं उनका निर्देशकीय वक्तव्य 'आधे–अधूरे' के संबंध में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है उनके अनुसार परिवार का हर सदस्य एक–दूसरे के कटा हुआ है घर की हवा तक में उस स्थायी तलखी की गंध है, जो पाँचो व्यक्तियों के मन में भरी हुई है–ऊब, घुटन, आक्रोश, विद्रूप–दम घोंटने वाली मनहूसियत, जो मरघट में होती है6 परिवार के मूलाधार के रूप में सावित्री तथा उसका पति न एक–दूसरे के करीब हैं, न एक–दूसरे के पूरक और न ही एक–दूसरे के लिए संयोजन, संशोधन, के लिए उत्सुक प्राणी वे एक–दूसरे के लिए तिक्त हैं, एक दूसरे से विमुख हैं, एक–दूसरे के प्रति संवेदनहीन और विचार तथा आचरण के स्तर पर विपन्न हैं वे आरोपित भी नहीं हो पाते हैं, न ही कृत्रिम ही हो पाते हैं वे केवल संबंधों के प्रति उदासीन और तिक्त होते हैं डॉ सी विश्वनाथन ने 'आधे–अधूरे' का अध्ययन करते हुए अपने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये हैं उनके अनुसार–राकेश के अधिकांश स्त्री–पुरुष अपने दाम्पत्य–जीवन में तीसरे आदमी के प्रवेश से अभिशप्त जिन्दगी जीने वाले हैं7 उनकी संतानें भी अपने मनोकोषों से ग्रस्त हैं उनके आचरणों में माता–पिता की तुलना में और अधिक आकस्मिकतायें तथा असंगतियाँ हैं वे स्वयं अपने से लेकर परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति उदासीन, तिक्त तथा सुधीहीन हैं यही कारण है कि परिवार की विविध आन्तरिक जटिलतायें सतह पर उत्पन्न हो जाती हैं किसी भी बिन्दु पर मानवीय संबंध के प्रति आकर्षण और संवेदना का संचरण उपलब्ध नहीं होता मानवीय संवेदना का संचरण यदि निजी व्यक्तिगत जीवन में न हो तो पारिवारिक स्तर पर सम्भव नहीं होता और धीरे–धीरे इस प्रकार की घटना पूरे समाज और मानव परिवार के जगत तक फैल जाती है इस प्रकार हीन मानवीय संबंधों की अभिव्यक्तियाँ हर कहीं परिलक्षित हो जाती हैं व्यक्ति अस्वस्थ होता है और परिवार रूग्न होकर समाज को भी मूल्यों से विपथित करता है मोहन राकेश ने मानवीय संबंध और मूल्य बोध को संश्लेषित गुण के रूप में रेखांकित किया है मानवीय सम्बंध तथा संबंधों के मूल्य व्यक्ति से लेकर समाज के हर स्तर को प्रभावित करते हैं मनुष्य संबंधनशील प्राणी है वह संबंधों का सृजन करता है संबंधों का सृजन करता हुआ एक बिन्दु पर संबंधों का जनक होता है और दूसरे बिन्दुओं पर पोषक, अभिभावक तथा अन्यतम निर्वाहक होता है यह पूरा कार्य–व्यापार मनुष्य के विचार, भाव, कार्य के नैतिक पक्ष हैं इसके अंतर्गत ही जीवन की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति का अनुष्ठान चलता रहता है राकेश मनुष्य को इस बिन्दु पर उसकी व्यवहारिक तथा सैद्धान्तिक समग्रता और पूर्णता में देखना चाहते हैं मनुष्य को उसके आधे–अधूरेपन में नहीं बल्कि पूर्णता के सार्थक अभिप्राय में रंगचेतना के चिह्न प्रकट करते हैं।

पारिवारिक जीवन का आरम्भ प्रेमारंभ से हो अथवा विवाहोपरान्त स्वाभाविक आकर्षण से जीवन के सच जीवन के ही सच होते हैं ऐसी स्थिति में प्रेमी तथा प्रेमिका का रूपान्तरण पति–पत्नी के रूप में हुआ हो अथवा अन्य घटना घटी हो जीवन दोनों बिन्दुओं पर है जीवन की प्राथमिक आवश्यकतायें हैं, दैनिक जीवन के लिए दोनों सदस्यों के हित में एक–दूसरे के प्रति गहरी समझदारी के साथ नवीन जीवनारंभ हो की अपेक्षा रखते हैं यहाँ परस्पर विचार–विनियम, कार्य योजना तथा परिणाम और जीवन की मौलिक अभिलाषा का ध्यान रखना होता है मनुष्य जो चाहता है उसके लिए उसे स्वयं को अनुकूल पात्रता के रूप में आविष्कृत करना पड़ता है, अन्यथा चाहना पूरा नहीं हो पाता 'आधे–अधूरे' यही कारण है कि भावों, विचारों एवं कार्यों की जटिल दुर्घटनाओं का जीवन चित्र बन गया है मानवीय संबंध मनुष्य के लिए संजीवनी के समान हैं इन संबंधों में छल–प्रपंच, कृत्रिमता, विष प्रभाव और यान्त्रिकता के लिए जगह या अवसर नहीं होना चाहिए ये सारे बिन्दु मनुष्य के लिए हितकर नहीं है जीवन में इनका समावेश होते ही मनुष्य की जीवन प्रक्रिया में व्यापक उद्वेलन हो जाता है और मनुष्य इससे संघर्ष कर अपने को स्थापित करने का प्रयत्न करता है 'आधे–अधूरे' नाटक में यह प्रयत्न समस्त गुणों की विलुप्ति के अंतर्गत क्षीण रूप में प्रकट है राकेश मनुष्य की इस चेतना को खोना नहीं चाहते वह मनुष्य को उसके अधूरेपन के बीच अपनी पूर्णता के लिए जीवन्त रूप से संघर्ष करते हुए पाने के लिए में देखना चाहते हैं ।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि मोहन राकेश के ये दोनों नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' और 'आधे–अधूरे' महत्त्वपूर्ण नाटक हैं पारिवारिक धरातल पर ये दोनों नाटक परिवार के जटिल रूप को प्रकट करते हैं 'आषाढ़ का एक दिन' में मल्लिका एवं कालिदास का परिवार निर्मित नहीं हो पाता और 'आधे–अधूरे' में सावित्री तथा महेन्द्रनाथ का परिवार निर्मित तो होता है परन्तु एक स्वस्थ, श्रेष्ठ और सुन्दर परिवार का उदाहरण नहीं बन पाता 'आधे–अधूरे' का परिवार बाहर–भीतर से बिखरा हुआ परिवार है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *चातक, डॉ गोविन्द, आधुनिक हिन्दी नाटक का अग्रदूत मोहन राकेश, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली–2, पृष्ठ सं–65*
2. *Spencev W, HevWbevWt, The Principles of Sociology] London] William NovWgate-*
3. *MacivevW and page] Society London PvWinted in U-S-A-*
4. *मोहन राकेश, आषाढ़ का एक दिन, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली–6, संस्करण–2008, पृष्ठ सं–5*
5. *वही, पृष्ठ सं–108*
6. *शिवपुरी, ओम, नाट्या संस्था दिशान्तर, स्रोत (आधे–अधूरे), राधाकृष्ण प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली–2, पृष्ठ सं–अपप*
7. *डॉ विश्वनाथन, सी, मोहन राकेश की रचनाओं में आधुनिक भाव बोध, माया प्रकाशन, हंसपुरम, कानपुर, पृष्ठ सं–110*